किन्नर केन्द्रित प्रमुख हिन्दी उपन्यासों की भाषिक सरंचना

ज्योति.,

शोधार्थी,
हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषा विभाग,
डॉ0 शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय,लखनऊ

डॉ0 वीरेन्द्र सिंह यादव,

एसोसिएट प्रोफेसर,
हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषा विभाग,
डॉ0 शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय,लखनऊ

शोध सारांश

साहित्य में भाषा का महत्वपूर्ण स्थान है भाषा अभिव्यक्ति का प्रमुख साधन है जिसके द्वारा मनुष्यों में परस्पर विचार विनमय की क्रिया होती है। भाषा में शब्द समूह का विशेष स्थान रहता है जैसे तत्सम, तद्भव, देशज विदेशी शब्दों के साथ–साथ भौगोलिक विशेष की बोलियों के शब्दों प्रयोग एवं लोकोक्तियों एवं मुहावरों का प्रयोग सहचर शब्दों, लोकगीतों का प्रयोग भाषा को भाव, अभिव्यक्ति में सहायता प्रदान करते है। भाषा में सहजता एवं सरलता के लिए विभिन्न प्रकार के तत्सम, तद्भव देशज विदेशज शब्दों को अपनाया जाता है।

Keywords: *प्लास्टिक सर्जरी, हार्मोन्स, थोबड़ाऊ, केयरफुल, लफड़ा–वफड़ा।*

पूरे विश्व में भाषा 'शब्द' के अनेक अर्थो को ग्रहण किया जाता है। भाषा के व्यापक अर्थ के स्वरूप मनुष्यों एवं जीव–जन्तुओ के भाव विशेष तथा विचारों के आदान–प्रदान के प्रमुख साधन को भाषा नाम से अभिनीत किया जाता है। ''हमारे मन के भाव अथवा विचार जिस साधन के द्वारा व्यक्त होते हैं अथवा सम्पादित होते हैं, उसे भाषा कहते हैं। [1]

प्रायः भाषा के अध्ययन क्षेत्र को संकुचित समझा जाता है। भाषा का अर्थ लिखित भाषा को ही समझा जाता है। जबकि ऐसा नही है। जीव–जन्तुओं की बोली, संकेत चिन्हो इंगित एवं व्यक्ति विशेष की भाषा को 'भाषा' शब्द के अर्थ में स्वीकार किया जाता है।

पशु–पक्षियों की बोलियों को भी भाषा के अर्थ में प्रयुक्त किया जाता है जैसे 'समुझइ खग खग ही कै भाषा' उपयुक्त रामचरित मानस में तुलसीदास कहते हैं। 'इंगित शरीरिक अंगों के द्वारा भी भावों को प्रकट किया जाता है। जैसे–आँख, हाथ, माथा आदि शारीरिक अंगों को हिलाने से अनेक अर्थो की अभिव्यक्ति होती है। आँखो से इशारे के माध्यम से मनोभावों को प्रकट किया जाता है। हाथ, माथा, हिलाने से भी संकेत प्राप्त होते है। अतएव हम इन्हे भी भाषा का माध्यम ही स्वीकार करेगें।

सैनिक, अनेक देश, धार्मिक सम्प्रदायों के अपने झण्डों से, धार्मिक सम्प्रदाए अपने चिन्हों के माध्यम से अपने भावों को प्रकट करते हैं। सड़कों, रेल प्लेटफार्म, ऐयरपोर्ट पर सांकेतिक भाषा का प्रयोग किया जाता है।

भाषा शब्द की उत्पत्ति

'भाषा' शब्द संस्कृत की भाष् (भ्वादिगणी) धातु से निर्मित है। जिसका अर्थ है– व्यक्त वाणी के रूप में जिससे मनोभावों का उद्घाटन हो उसी को 'भाषा' कहा जाता है। भाषा मन के भावों को उद्घाटित करने का प्रमुख माध्यम है जिससें सभी जीवधारी अपने भावों को विभिन्न प्रकार से प्रकट

करते हैं। हिन्दी भाषा के पाणिनी कहे जानें वाले कामता प्रसाद गुरू के शब्दों में–

''भाषा वह साधन है जिसके द्वारा मनुष्य अपने विचार दूसरों पर भलीभांति प्रकट कर सकता है और दूसरों के विचार आप स्पष्टता समझ सकता है।'' [2]

उपयुक्त परिभाषा से यह स्पष्ट हो जाता है की भाषा के माध्यम से व्यक्ति एक दूसरे को भलीभांति समझ पाता है। डॉ0 श्याम सुन्दर दास के अनुसार–

''मनुष्य और मनुष्य के बीच वस्तुओं के विषय में अपनी इच्छा और मति का आदान–प्रदान करने के लिए व्यक्ति ध्वनि–संकेतों का जो व्यवहार होता है, उसे भाषा कहते हैं।'' [3]

डॉ0 भोलानाथ तिवारी का मत दृष्टव्य है– ''भाषा मानव उच्चारणावयवों से उच्चरित यादृच्छिक ध्वनि प्रतीकों की वह संरचनात्मक व्यवस्था है, जिसके द्वारा समाज विशेष के लोग आपस में विचार विनमय करते है'' [4]

इटली साहित्यकार क्रोचे का मत है की– ''भाषा उस स्पष्ट, सीमित तथा सुसंगठित ध्वनि को कहते हैं जो अभिव्यंजना के लिए नियुक्ति की जाती है।'' [5]

भाषा वैज्ञानिक मेक्समूलर के शब्दों में– ''भाषा और कुछ नहीं हैं, केवल मानव की चतुर बुद्धि द्वारा अविष्कृत एक ऐसा उपाय है जिसकी मद्द से हम अपने विचार सरलता और तत्परता से दूसरों पर प्रकट कर सकते है और जो चाहतें हैं इसकीक व्याख्या प्रकृति की उपज के रूप में नही बल्कि मनुष्यकृत पदार्थ के रूप में करना उचित होगा।'' [6]

साहित्य में भाषा का महत्वपूर्ण स्थान है भाषा अभिव्यक्ति का प्रमुख साधन है जिसके द्वारा मनुष्यों में परस्पर विचार विनमय की क्रिया होती है। भाषा में शब्द समूह का विशेष स्थान रहता है जैसे तत्सम, तद्भव, देशज विदेशी शब्दों के साथ–साथ भौगोलिक विशेष की बोलियों के शब्दों प्रयोग एवं लोकोक्तियों एवं मुहावरों का प्रयोग सहचर शब्दों, लोकगीतों का प्रयोग भाषा को भाव, अभिव्यक्ति में सहायता प्रदान करते है। भाषा में सहजता एवं सरलता के लिए विभिन्न प्रकार के तत्सम, तद्भव देशज विदेशज शब्दों को अपनाया जाता है। अतः हिन्दी साहित्य में किन्नर केन्द्रित उपन्यासों की भाषिक संरचना का हम उपन्यासों के माध्यम से विश्लेषण करेगें।

यमदीप

किन्नरों के जीवन को केन्द्रित करके लिखा गया यह पहला उपन्यास है उपन्यास में उन व्यक्तियों के जीवन संघर्ष का यर्थाथ चित्रण किया गया है जिसे यह समाज आज भी खुले मन से स्वीकार नही करता है। 'यमदीप' बनारस की भूमि की कथा है। बनारस में 'अवधी, भोजपुरी भाषा बोली जाती है। उपन्यास में लेखिका ने इन बोलियों का प्रयोग बड़ी ही सहजता से किया है जैसे– बेना (गेंहू की नरई से बना हुआ पंखा) दबंगई (अकड़), टेटुंआ (गला) बनारस के शिक्षित एवं अनशिक्षित पात्रों के माध्यम से लेखिका शब्दों का चयन बड़ी सजगता से करती है।

''हे, हे, खैरगल्लै इस पत्थर से अपने बाप का थोबड़ाऊ कोड अपने रिश्तेदार का थोबड़ाऊ फोड़ जो किसी पागल को भी नही छोड़ते।'' [7]

उपन्यास की एक मात्र मानवी की नौकरानी मुन्नी अपने नशेड़ी पति की हरकतों से तंग आकर यह बात कहती है।

यमदीप उपन्यास में विभिन्न प्रकार के शब्दों का उपयोग किया गया है जिससे उपन्यास में सजीवता का अनुभव पाठक करता है तत्सम शब्द– अनगल, परिष्कृत, प्रदर्शित, उद्वेलन, ग्रामीण शब्द–पनारा, एबहीं, ओकीरे, आदि। उर्दू शब्द–अल्लाह, गुरौवत, दोजख तथा अंग्रेजी भाष के शब्द– स्ट्रेटेजी, करियर, न्यूज, टीचर, कॉल,

बी केयरफुल का स्वभाविकता से प्रयोग किया गया है, साथ ही शब्द युग्मों का भी प्रयोग किया गया है। ताक–झांक, लफड़ा–वफड़ा बूढ़ी बूढ़ा आदि।

मुहावरें एवं लोकोक्तियाँ का मावन जीवन में सहजता के साथ प्रयोग किया जाता है दीदार करना हाय तौबा करना, पासा पलटना, थू थू करना आदि मुहावरों का प्रयोग तथा हींग लगे न फिटकरी रंग चोखा, साँप मर जाए लाठी भी न टूटे, जब जागे तब सबेरा आदि पुरानी कहावतों का प्रयोग किया गया है। नीरजा माधव ने उपन्यास में सजीवता लाने के लिए सूक्तियों का भी उपयोग किया है–

1. जो भाग्य में होता है उसे ना अधिक मिलता है न खोता है।
2. सहानुभूति पीड़ा की कड़ी से कड़ी चट्टान को पिघला देती है।
3. टूटे कुंए की ही ईंट सब लोग उखाड़ते हैं।

तीसरी ताली

तीसरी ताली प्रदीप सौरभ द्वारा रचित किन्नर केन्द्रित उपन्यास है। इस उपन्यास में किन्नरों के साथ–साथ 'गे' और लेस्ब्रियन के बारे में भी बताया गया है। उपन्यास में विनीत से विनीता बने किन्नर की जन्म से लेकर मृत्यु तक की घटनाओं का बड़ी सरलता, स्वाभाविकता के साथ वर्णन किया गया है। गे–वर्ल्ड की असलियत उपन्यास के माध्यम से समाज के सामने प्रस्तुत किया गया है। उपन्यास में किन्नर जीवन से संबन्धित सभी जानकारियों का एक जथ्था तैयार किया गया है हिजड़े के हाव भाव, रूप–रंग–चुनरी रस्म, ईष्ट देवी, पूजा–विधि रीति–रिवाज की विस्तार पूर्वक चर्चा की गई है।

उपन्यास में सरल भाषा का प्रयोग किया गया है साथ ही किन्नर की पारिभाषिक शब्दावलियों से युक्त, अंग्रेजी एवं अरबी फारसी भाषा के शब्दो के साथ, मुहावरों एवं कहावतो का प्रयोग किया गया है।

''आमतौर पर हिजड़े अंटी ढीली करवा ही लेते है लेकिन गौतम साहब के मामले में वे पसीने–पसीने हो गये और उनकी दाल नही गली।'' [8]

उपयुक्त पक्तियों में आमतौर, तमाम्, शोरगुल आदि विदेशी शब्दों का प्रयोग किया गया है साथ ही साथ' अंटी ढीली करवाना, दाल नही गलना जैसे मुहावरों का प्रयोग किया गया है।

उपन्यास में विदेशी शब्दों के साथ–साथ तत्सम, तत्भव, अंग्रेजी शब्दों का भी प्रयोग किया गया है। हरमोफ्रोडाइटस (स्त्री–पुरुष) लक्षणो वाला, डील, कारमेटिक प्लास्टिक सर्जरी, वेजाइना रिकस्ट्रकशन, हारमोंस, फैंशन, डिजाइनर, पेज–थ्री, ब्यूटीशियन इंस्टीट्यूट ट्रेनिंग आदि अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग किया गया है। प्रातः काल मंगलसूत्र, नितम्ब, प्रतिष्ठित आदि तत्सम शब्दों का प्रयोग किया गया है।

''आखिर हम लोग भी तो गिरिया रखते हैं वह भी तो एक प्रकार की समलैंगिकता है'' [9]

गिरिया रखना किन्नरों में एक परम्परा थी। घराने के मुखिया को नायक या 'गुरू' माँ कहा जाता था। किन्नर जिनसे शादी करते है या जिन्हें अपना पति स्वीकार करते हैं उन्हें गिरिया कहा जाता है। गिरिया किन्नरों का पारम्परिक शब्द है।

मैं भी औरत हूँ

प्रस्तुत उपन्यास डॉ0 अनुसूया त्यागी के द्वारा लिखा गया है जो एक स्त्री एवं प्रसूति रोग विशेषज्ञ है। उपन्यास किन्नर को केन्द्र में लेकर

लिखा गया है। उपन्यास में किन्नरों के जन्म के कारण एवं इनके इलाज के विषय में समाज को जागरुक करने का प्रयास किया गया है। उपन्यास की भाषा एवं शैली की चर्चा की जाऐ तो उपन्यास चूंकि एक स्त्री रोग विशेषज्ञ के द्वारा लिखा गया है तो इसमें चिकित्सा समबन्धित शब्दावलियों के साथ–साथ, अंग्रेजी, उर्दू अरबी, फारसी, शब्दो का प्रयोग किया गया है।

''मैं पत्नी का सुख पा सकती हूँ पर मैं किसी पुरुष को स्वीकार सिर्फ इसलिए नही कर पा रही हूँ कि मैं उसे बच्चा नहीं दे सकती, वैसे यह कोई बड़ी बात नहीं है पर वे माँ नहीं बन पाती तो क्यों वे जिन्दगी का सुख नहीं माँगती? फिर मैं स्वभाव से इतना अलग क्यों हूँ। आज के इस आधुनिक युग में आई0बी0एफ0 जैसी आधुनिक टेक्नोलॉजी है जिससे आप माँ बन सकती हैं।'' [10]

उपन्यास में एक किन्नर की मनोदशा का वर्णन किया गया है जो अपने को स्त्री महसूस करते हुए भी किसी पुरुष को नही स्वीकार कर पा रही है क्योंकि वह माँ नही बन सकती। उपन्यास में अल्ट्रासाउंड, प्लास्टिक सर्जन, ऑपरेशन थियेटर, सेटेलाइट सेंटर, जेंडर सर्जरी, सोरोगेटेड मदर आदि शब्दों का प्रयोग किया गया है।

किन्नर कथा

महेन्द्र भीष्म द्वारा रचित उपन्यास किन्नर कथा, किन्नर जीवन की त्रासदी की कथा मार्मिक रूप से प्रस्तुत होती है। उपन्यास की कथा एक ऐतिहासिक नगर जेतपुर से होती, यहाँ के राजा जगतराज सिंह बुंदेला के किन्नर पुत्री सोना की करूण कथा है एक राजपरिवार में जनमें किन्नर की दारूल कथा के मार्मिक पक्षों को बड़ी गहनता के साथ उद्घाटित किया गया ।

उपन्यास की कथा वस्तु जेतपुर की भूमि पर रचि गई है अतः एक राजपरिवार की भाषा शैली तथा स्थानियता की बोली का प्रभाव इस उपन्यास को सजिवता प्रदान करता है। उपन्यास में बुंदेली बोली के साथ–साथ, तत्सम, तद्भव, अंग्रेजी, देशज, विदेशज, लोकोक्तियों एवं मुहावरों का प्रयोग किया गया है।

''अरे कक्काजू! तमाई उंगली पे खून, कहते हुए सोना ने पंचम सिंह की रक्तरंजित उंगली का अग्रभाग अपने मुँह में रख लिया। फिर अपने बालों से सफेद फीता खोलकर अपने कक्काजू की घायल उंगली पर पट्टी की तरह बांधने का प्रयत्न करने लगती है। वह बाल सुलभ स्नेहवश बोले जा रही थी, हमाए कक्काजू हाँ चोट लग गई।'' [11]

उपन्यास में बुन्देली बोली के शब्दों का प्रयोग किया गया है। उपन्यास में मंत्रमुग्ध, तिरस्कार, अछूत, परम्परा, जिज्ञासा, परोपकारी आदि शब्दों के साथ–साथ अजूबा, बचपन, रीति–रिवाज, शिकायत, फर्क, बेरोजगारी आदि विदेशी शब्दों के साथ–साथ बुचरा, छिबरा, 'अबुआ' लिंगोच्छेदन मनसा पारम्परिक किन्नर शब्दों 'थिरू नागाई' (ईश्वर पुत्री) आदि शब्दों का प्रयोग हुआ है। 'सदगुरू दाता चरण बंदगी' धार्मिक उद्घोष के साथ अंग्रेजी की कहावत 'आउट ऑफ साइट आउट ऑफ माइट' का प्रयोग उपन्यास की भाषा शैली को सुदृढ़ बनाते हैं।

गुलाम मंडी

गुलाम मंडी (2014) निर्मला भुराड़िया द्वारा लिखा गया मार्मिक उपन्यास है उपन्यास किन्नर केन्द्रित होने के साथ–साथ ह्यूमन ट्रेफिकिंग यानी मानव तरकरी जैसे ज्वलंत मुद्दे को समाज के सम्मुख प्रस्तुत किया गया है। उपन्यास में ह्यूमन ट्रेफिकिंग में फसें लोगों की जिन्दगी कितने कष्टों

से भरी पड़ी है इसका सजीव रेखांकन भुराड़िया जी करती है।

''श्राद्ध के दिनों में ही न! स्वार्थ रहता है न तुम्हारा। आड़े दिन में जो कहीं कौआ आकर बैठ जाए न, तुम तो नहाओगे, धोओगे, अपशगुन मनाआगी जैसे हम न तुम्हारे जो शादी–ब्याज हो तो नाचेंगी–गायेंगी, शगुन पाओगी मगर यूँ जो रास्ते में आ पड़ी न हम, तो हिजड़ा कहकर धिक्कारोगी।'' [12]

उपन्यास किन्नर समुदाय की समस्याओं को समाज के सामने प्रस्तुत करता है। समाज के द्वारा किए गये अत्याचारों को उजागर करता उपन्यास की एक पात्र यह कथन कहके अपना दुख जताती है उपन्यास में अंग्रेजी, हिन्दी, अरबी फारसी देशज, वेदेराज शब्दों का प्रयोग बड़ी सजगता से किया गया है।

उपन्यास में मेल–फिमेल, ह्यूमन ट्रेफिकिंग जेंडर, कलेक्टर, पुलिस आदि अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग किया गया है। शिकायत, दखलंदाजी, गैरजरूरी, श्मशान, स्वागत, शक्ल, दावेदारी, वकालत कचरे, दाखिले आदि विदेशी शब्दो का उपयोग कर उपन्यास की भाषा को सहज बनाया गया है।

इस उपन्यास में सभी घटनाओं को इतनी सजीवता के साथ प्रस्तुत किया गया है मानो की वह हमारे सामने ही घटित हो रही है। उपन्यास की भाषा शब्द–चित्र भी ऐसे प्रस्तुत किए गये है जैसे कैमरे के द्वारा कोई–दृश्य–दर्शन कर रहे हों।

मैं पायल

महेन्द्र भीष्म द्वारा रचित यह दूसरा महत्वपूर्ण उपन्यास किन्नरों के शोषित जीवन की गाथा है। समाज में किन्नरों के साथ होने वाले भेदभाव अपमान का यथार्थ चित्रण इस उपन्यास में हुआ है। उपन्यास आत्म कथात्मक शैली में लिखा गया है। पायल नामक किन्नर ने अपने बचपन से लेकर अभी तक के घटनाक्रम को बड़ी तनमयता के साथ प्रस्तुत करती हैं।

उपन्यास की भाषा बड़ी सजीव है उपन्यास में तत्सम, तद्भव, देशी विदेशी शब्दों का बेजोड़ मेल है। दिग्दर्शित, अनिच्छापूर्वक, रात, प्रतिशत, परिस्थितियाँ, नरभक्षी, प्रतिकार, क्षत्रिय, अंग कवज, अंतवेदना, संघर्ष, विड़म्बना आदि तत्सम, तद्भव शब्दों का प्रयोग गया है। प्लेटफार्म, रेलगाड़ी, आजमाइश, बेरहमी बेशर्म, हवाले, कूड़े–कर्कट, अत्याचार आदि विदेशी शब्दो का प्रयोग हुआ है।

उपन्यास में किन्नर पायल अपने दुख को गीत के माध्यम से समाज को बताती है। उसके मन की पीड़ा को अभिव्यक्ति मिलती है–

''अधुरी देह क्यों मुझको बनाया,
बता ईश्वर तुझे ये क्या सुहाया,
किसी का प्यार हूँ न वास्ता हूँ,
न तो मंजिल हूँ मैं न रास्ता हूँ,
कि अनुभव पूर्णतः का हो न पाया,
अजब यह खेल, रह–रह धूप छाया।।'' [13]

निम्न पक्तियों से किन्नर जीवन की त्रासदी का पता चलता है की हिजड़े के रूप में जन्म लेना कितना कष्टकारी है।

गली मौहल्लों में बधाई गीत गाते समय समाज किस तरह से इनका मजाक बनाता है, इनपर हंसता है, इन्हे हिजड़ा–हिजड़ा कहकर अपमानित किया जाता है इन शब्दों से दुखी होकर पायल कहती है–

''न गरमी में गरम, न सर्दी में शरद न औरतों में औरत, न मर्दो में मरद। हम तीसरे नस्ल वाले, दुनिया से निराले हैं, मुन्ने कटी अम्मा! हाँ जी जरा बटुआ खोला ये चाँद–सा बेटा चाँदी

में तोलो अरे दस का नही तो एक अठन्नी ही दे दो अरे जुग–जुग जिएय तेरा लल्ला।'' [14]

प्रस्तुत उपन्यास में पायल द्वारा किन्नर समाज की पारंपरिक गीत परम्परा का सुन्दर उदाहरण है।

पोस्ट बॉक्स नं0–203 नाला सोपारा

महिला कथाकारों में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखनेवाली चित्रा मुद्गल द्वारा रचित महत्वपूर्ण उपन्यास पोस्ट बॉक्स नं0–203 नाला सोपारा किन्नर जीवन को समर्पित। उपन्यास में किन्नर जीवन की त्रासदी के साथ साथ इनके उत्थान के लिए नई दिशाओं की खोज करने का प्रयास किया गया है उपन्यास में विनोद/बिन्नी उर्फ विमला तथा उसकी माँ की मार्मिक कथा का चित्रण किया गया है। पत्र शैली में रचित यह उपन्यास माँ–बेटे के बीच की सहानुभूति का सेतु है। उपन्यास में घटनाओं का वर्णन क्रमबद्ध तरीके से पत्रों के माध्यम से होता है। पत्र शैली विचार–प्रवाह अभिव्यक्त करने में बहुत उपयोगी मानी जाती है। उपन्यास अपनी कथा एवं शिल्प की विशेषता के कारण पाठक को अपनी ओर आर्कषित करता है। माँ एवं बेटे के बीच का पत्र संवाद बहुत ही मार्मिक है। उपन्यास में गुजराती तथा मराठी भाषा के शब्दों के साथ उर्दू, फारसी, अरब, तत्सम तद्भव, आदि भाषाओं का प्रयोग किया गया है। भाषा अत्यन्त सरल एवं प्रभावमयी है।

''असमाजिक तत्वों के हाथ की कठपुतली बनने में जितनी भूमिका किन्नरों के सन्दर्भ में सामाजिक बहिष्कार तिरस्कार की रही है, उससे कम उनके पथभ्रष्ट निरंकुश सरदारों और गुरूओं की रही ऊपर से विकल्पहीनता की कुंठा ने उन्हे आँधी का तिनका बना दिया।'' [15]

''देता कोई नही, लेना पड़ता है अपना हक, समाज से सत्ता से....। लिंग–पूजक समाज लिंग विहीनों को कैसे बरदाशत करेगा? माता–पिता दोषी है, मगर उससे ज्यादा दोषी है, क्रुर, निष्ठुर, पाखंडी धर्म विशेषज्ञों की धर्मान्धता'' [16]

जिन्दगी 50–50

युवा कथाकार भगवत अनमोल द्वारा रचित जिन्दगी 50–50 किन्नर केन्द्रीत उपन्यास है। उपन्यास में हर्षा उर्फ हर्षिता की कथा को आधार बनाया गया है। उपन्यास में किन्नर जीवन की त्रासदियों का सचित्र वर्णन किया गया है। उपन्यास की भाषा सरल एवं सहज है किन्नरों की पारम्परिक बोली का उपयोग किया गया है। बोलचाल की भाषा के साथ देशज और विदेशज शब्दों के साथ–साथ अंग्रेजी एवां लोकोक्तियाँ से पूर्ण है।

''आपका बेटा बाप नहीं बन पाएगा... आपके बेटे का शिशन अपरिपक्व है और उसके दोनों टेस्टिकल्स नहीं है।'' [17]

'' पर एक बात नोट कर ले तिवारी हिजड़े का बाप है तू हिजड़े का! और इतना आसान न है समाज में एक हिजड़े का बाप बनकर जीना 'सुई की नोक पर रहना' होत है! उसकी चुभन से तोरा पैर ही नही तोरा शरीर ही नही तोरी आत्मा तक तड़पेगी... यह समाज तुझे जीने का देगा या तू खुद मर जाएगा, या फिर खुद तंग आकर चलते हुए उस बच्चे को हमारे पास देने आएगा'' [18]

निम्न पक्तियों में साधारण बोलचाल की देहाती भाषा के साथ मुहावरे का प्रयोग किया गया है। जिन्दगी 50–50 किन्नर जीवन की कठिनाई को उजागर करने वाला उपन्यास है। उपन्यास की भाषा शैली सरल एवं प्रवाहमय होने के साथ–साथ देशज, विदेशज, अंग्रेजी, ग्रामीण, लोकोक्तियों, मुहावरों का प्रयोग किया गया है।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है की किन्नर समाज साधारण जनसमुदाय की तरह ही भाषा के विविध स्वरूपों को धारण करता है साथ ही किन्नर समाज की अपनी एक विशिष्ट भाषा भी होती है जो किन्नर अपने समुदाय में प्रयोग करते हैं। प्रायः देखा गया है कि किन्नर सामाजिक उपेक्षाओं के कारण खिन्न रहते हैं जिसके कारण इनकी भाषा में भी कटु वचनों का प्रयोग होने लगता है। किन्नर हमारे ही तरह समाज का एक अंग है इन्हे ह्रदय से स्वीकार करने की आवश्यकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. डॉ0 दीक्षित मीरा, भाषा–विज्ञान के सिद्धान्त, सुमित प्रकाशन, द्वितीय संस्करण– 2008, पृष्ठ संख्या–9
2. वही पृष्ठ संख्या–10
3. दास श्याम सुन्दर बाबू, भाषा–विज्ञान, पृष्ठ सख्या–20
4. तिवारी भोलानाथ, भाषा–विज्ञान, बहादुर सिंह, हिन्दी साहित्य का विकास, पृष्ठ संख्या–2
5. डॉ0 दीक्षित मीरा, भाषा–विज्ञान के सिद्धान्त, सुमित प्रकाशन, द्वितीय संस्करण– 2008, पृष्ठ संख्या–10
6. वही पृष्ठ संख्या–10
7. माधव नीरजा, यमदीप, सम्यक प्रकाशन, नई दिल्ली 2002, पृष्ठ संख्या–11
8. सौरभ प्रदीप, तीसरी ताली, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली 2011, पृष्ठ संख्या–124
9. वही पृष्ठ संख्या–56
10. डॉ0 त्यागी अनुसूया, मैं भी औरत हूँ, परमेश्वरी प्रकाशन, नई दिल्ली 2005, पृष्ठ संख्या–57
11. भीष्म महेन्द्र, किन्नर कथा, सामयिक बुक्स प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या–35
12. भुराड़िया निर्मला, गुलाम मंड़ी, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या–12
13. भीष्म महेन्द्र, मैं पायल, अमन प्रकाशन, कानपुर 2017, पृष्ठ संख्या–119
14. वही, पृष्ठ संख्या–101
15. मुद्गल चित्रा, पोस्ट बॉक्स नं0–203 नाला सोपारा सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली 2016, पृष्ठ संख्या–86
16. वही ,पृष्ठ संख्या–86
17. अनमोल भगवंत, जिन्दगी 50–50 राजपाल एंड संस नई दिल्ली 2017, पृष्ठ संख्या–28
18. वही ,पृष्ठ संख्या–35